शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक साहित्य संकलन

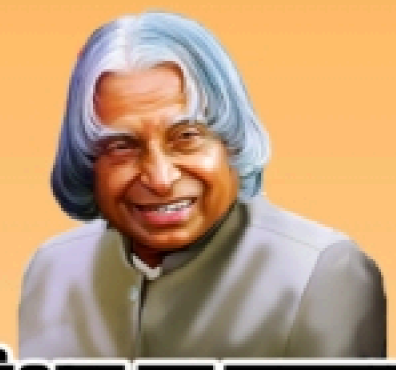

शिक्षक का सम्मान

अंक : 47

शिक्षण संवाद

माह : फरवरी | वर्ष : 2025

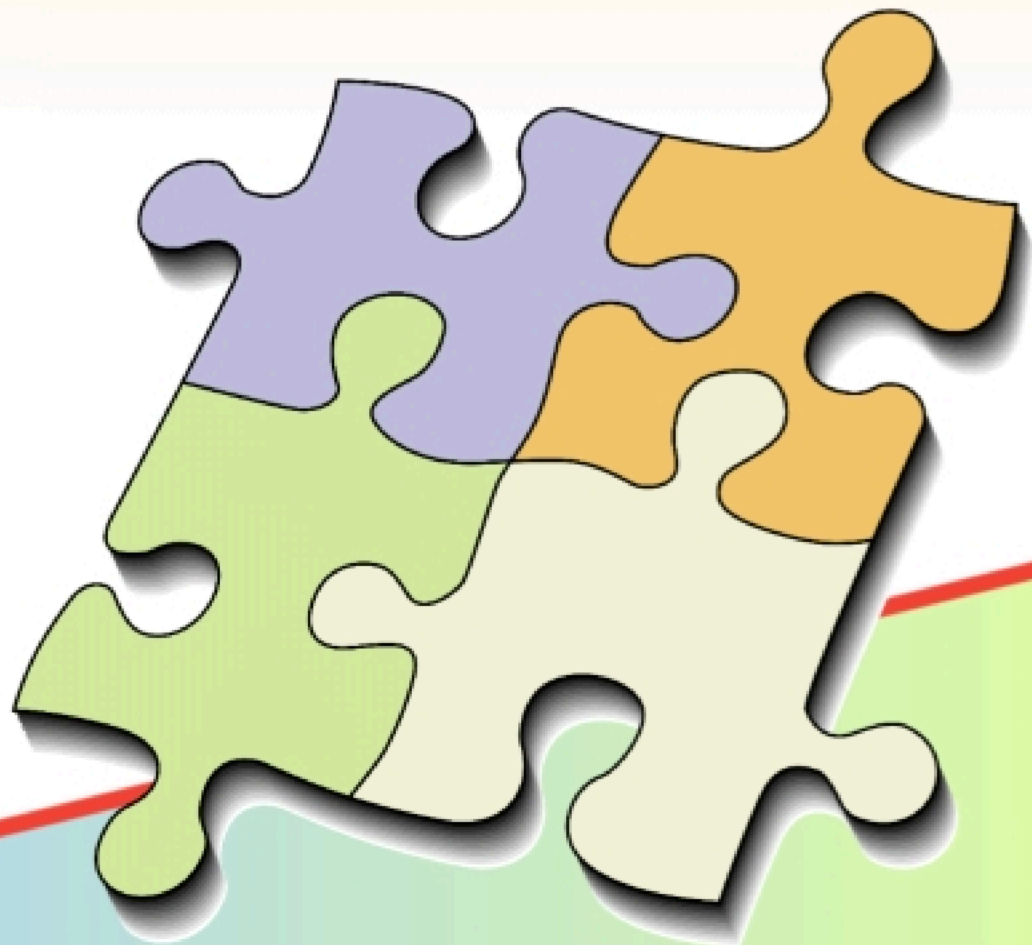

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं।

अंक : 47

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक साहित्य संकलन

प्रधान संकलन सहयोगी

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध संकलन सहयोगी

श्री अवनीन्द्र कुमार जादौन, श्री प्रांजल सक्सेना

संकलन सहयोगी

श्री आनंद मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, श्री बबलू सोनी

सह-संकलन सहयोगी

श्री सुशांत सक्सेना, श्री शंखधर द्विवेदी

छायांकन

श्री वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी

श्री जितेन्द्र कुमार, श्री अनिल मौर्य

विशेष सहयोगी

श्री विकास मिश्रा, श्री अफ़ज़ाल अहमद, श्री साकेत बिहारी शुक्ला

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं संपर्क नं० :-
9458278429

ई मेल :-
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :-
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

परिषदीय विद्यालयों के स्वतः स्फूर्त एवं जागरूक शिक्षकों के समूह “मिशन शिक्षण संवाद” द्वारा शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं की रचनाओं, गतिविधियों, लेख एवं प्रेरक प्रसंगों का ऑनलाइन मासिक साहित्य संकलन 'शिक्षण संवाद' प्रकाशित करना एक सराहनीय प्रयास है। शिक्षा शिक्षक, शिक्षार्थी एवं समुदाय का समन्वित एवं प्रगतिशील प्रयास है। 'शिक्षण संवाद' मासिक संकलन के 47 वें अंक (फरवरी- 2025) में प्राथमिक स्तर पर शिक्षण, अधिगम, नवाचार एवं शिक्षा से संबंधित जानकारी हेतु उपयोगी सामग्री संकलित की गयी है। इस सामग्री से छात्रों में कुछ नया सीखने और करने की इच्छा उत्पन्न होगी।

इस साहित्य संकलन के सभी स्तम्भ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, जो निश्चित रूप से शिक्षकों एवं छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। शिक्षकों में गतिविधि आधारित शिक्षण के प्रति रुचि उत्पन्न करने का कार्य करेंगे।

आपके इस अभिनव प्रयास के लिए मैं आप सभी को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह साहित्य संकलन शिक्षकों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

उदित कुमार
खण्ड शिक्षा अधिकारी
वि० क्षे०- बागपत, जनपद- बागपत

दो शब्द

ए० आई० के इस दौर में, शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण ने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। अब हमें पहले से कहीं अधिक ज्ञान और कौशल की आवश्यकता है ताकि हम इस बदलते हुए विश्व में अपनी जगह बना सकें।

मिशन शिक्षण संवाद ने सदैव से ही तकनीकी के महत्व को समझा है और इसे सहर्ष अपनाया है। कोरोनाकाल में जब एक ओर विद्यालय बन्द थे और शैक्षिक गतिविधियाँ ठप्प सी हो गई थीं तब तकनीक ही सहारा बनी थी। ऐसे समय में ऑनलाइन मीटिंग आदि की सहायता से जहाँ एक ओर शिक्षकों को इमेज व वीडियो बनाने में प्रशिक्षित किया गया वहीं विद्यार्थियों के लिए दैनिक शैक्षिक शीट बनाने का कार्य आरम्भ हुआ। विभिन्न विषयों से सम्बन्धित दैनिक शैक्षिक शीट इतनी लोकप्रिय हुईं कि अब सामान्य दिनों में भी इन्हें ऑनलाइन माध्यम से विद्यालय-विद्यालय पहुँचाया जाता है।

प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन भी विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्री का भण्डार होता है। यहाँ पाठकों के लिए उत्तम शैक्षिक लेख हैं तो कुछ नवाचार भी। महापुरुषों के सदविचार और प्रेरक प्रसंग हैं तो बच्चों के लिए प्रेरक कहानियाँ भी। संकलन का फरवरी 2025 का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है कृपया अपनी राय हमें लिखकर मेल पर अवश्य भेजें।

धन्यवाद !

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद

अनुक्रमणिका

विषयवस्तु		पृष्ठ संख्या
मिशन गीत	हम मिशन के सिपाही	8
अनमोल बाल रत्न	कैलाश कुमार, छवि	9
शिक्षक उपलब्धि	राजकुमार शर्मा, चित्रकूट	10
विचारशक्ति	अच्छी रेखा को लम्बा करना	11
टी. एल. एम. संसार	Save earth model	12
नवाचार	ट्रेन बनाओ, मुहावरे सुनाओ, अर्थ समझाओ	13
English Medium Dairy	Sunil Kumar, Baghpat	14
प्रेरक प्रसंग 1	मोरारजी देसाई	15-16
प्रेरक प्रसंग 2	मोरारजी देसाई	17-18
सद् विचार	रामकृष्ण परमहंस - विचारों के सागर	19
विज्ञान दिवस विशेष	विज्ञान प्रदर्शनी	20
बाल साहित्य	ये देश हमारा है	21
बाल कविता	It's Time To School	22
कस्तूरबा विशेष	बाल कहानी - शहरों में वायु प्रदूषण	23

अनुक्रमणिका

विषयवस्तु		पृष्ठ संख्या
बच्चों का कोना	बच्चों को संदेश	24
बात महिला शिक्षकों की	सुनीता कुमारी, बागपत	25
गतिविधि	FLN (हिन्दी भाषा) प्रशिक्षण सार	26-28
योग विशेष	योग - सकारात्मक जीवन शैली	29
खेल विशेष	पारम्परिक खेल - काला डंडा	30
मिशन हलचल	बाल रत्न वार्षिक परीक्षा - एक परिचय	31-32
शिक्षण तकनीकी	डिजिटल लिटरेसी व कोडिंग सॉफ्टवेयर	33

हम मिशन के सिपाही

हम मिशन के हैं सिपाही,
हम नवाचार अपनाते हैं।
नहीं घबराते असफलताओं से,
आगे ही बढ़ते जाते हैं।।

नैतिक प्रभात की कहानियों से,
व्यक्तित्व को महान बनाते हैं।
जीवन की सच्चाई से,
उनका परिचय करवाते हैं।।

नये-नये टी. एल. एम. द्वारा,
शिक्षण रुचिकर बनाते हैं।
खेल-खेल में ही बच्चों को,
विषयों को समझाते हैं।।

हम मिशन के हैं सिपाही,
हम नवाचार अपनाते हैं।...2

पढ़ाई से प्रतियोगिता अभियान में,
बच्चों को प्रतिभाग करवाते हैं।
आगामी परीक्षाओं की तैयारी कर,
मन से भय को दूर भागते हैं।।

काव्यांजलि, गीतांजलि में,
गीतों की सुन्दर ऐसी माला है।
जिसने विषयों की नीरसता को,
पल में दूर भगाया है।।

बालमन में हम सब मिलकर,
उत्साह और उमंग भरते हैं।
नयी-नयी विधियाँ अपनाकर,
शिक्षण कार्य करते हैं।।

शिक्षा के उत्थान, मानव के कल्याण,
के लिए हम प्रयास करते हैं।
शिक्षक को मिले हर जगह सम्मान,
यही सोच लेकर आगे बढ़ते हैं।।

हम मिशन के हैं सिपाही,
हम नवाचार अपनाते हैं।...2

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम
ब्लॉक- अमरौधा, जनपद- कानपुर देहात

इंस्पायर्ड अवार्ड

छात्र का नाम :- राज

पिता का नाम :- कैलाश कुमार

कक्षा :- 7

सहयोगी शिक्षक :- पूनम सारस्वत (स.अ.)

विद्यालय :- एकीकृत विद्यालय रुपानगला

विकास क्षेत्र :- खैर

जनपद :- अलीगढ़

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF SCIENCE & TECHNOLOGY

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान – भारत
National Innovation Foundation - India

inspire - manak

million minds augmenting national aspiration and knowledge

Certificate of Award

INSPIRE Reference No. : 24UP5615404

Dated: Feb 20, 2025

This is to certify that Raj D/o of Smt./Sh. kailash Kumar, student of Class 7 from District Aligarh of Uttar Pradesh has been selected for an INSPIRE MANAK of Rs. 10000/- (Rupees Ten Thousand Only) for the year 2024-25 for preparation of Science project / model and to participate in the District Level Exhibition & Project Competitions (DLEPCs) to be organized by the District Education Authority.

(Sandeep Bansal)
Scientist
Department of Science & Technology

9TH RAMPUR DOUBLOTHON

छात्रा का नाम- छवि

पिता का नाम- श्री दीवान सिंह

चयन का स्तर- मंडल स्तर

विद्यालय- पी० एम० श्री विद्यालय मुड़ियाखेड़ा (1-8)

विकास खण्ड- चमरौआ

जनपद- रामपुर

मार्गदर्शक शिक्षक - समस्त विद्यालय परिवार

डायट चित्रकूट में कला, क्राफ्ट, संस्कृति महोत्सव का आयोजन

निदेशक, एस० सी० ई० आर० टी० उ० प्र०, लखनऊ के आदेश के क्रम में जनपद स्तर पर कला, क्राफ्ट, संस्कृति एवं नवाचार महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन 21-22 मार्च 2025 को डायट शिवरामपुर चित्रकूट में किया गया। उक्त कला, क्राफ्ट, संस्कृति एवं नवाचार महोत्सव में जनपद के बेसिक के शिक्षकों एवं डायट के प्रशिक्षुओ के कला, क्राफ्ट, संस्कृति नवाचारों एवं टी० एल० एम० का प्रदर्शन कराया गया तथा सर्वश्रेष्ठ नवाचारों का अभिलेखीकरण कर उनकी पुस्तिका एवं डिजिटल डायरी तैयार की गयी।

इस प्रतियोगिता के क्राफ्ट वर्ग में उच्च प्राथमिक विद्यालय चित्रवार, ब्लॉक मऊ, जनपद चित्रकूट के प्रधानाध्यापक राज कुमार शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ डायट प्राचार्य डॉ० आदर्श कुमार त्रिपाठी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। प्राचार्य ने बताया कि कला शिक्षा छात्रों में रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का पोषण करती है।

कलात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को लीक से हटकर सोचने, नए विचारों का पता लगाने और खुद को अनूठे तरीकों से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ये कौशल न केवल कलात्मक प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण हैं बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी काम आते हैं।

इस महोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित वरिष्ठ प्रवक्ता नीलम यादव ने बताया कि कला और क्राफ्ट में संस्कृति का महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि वे हमारी सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं, हमारी पहचान को मजबूत करते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान और परंपराओं को हस्तांतरित करते हैं। इस कार्यक्रम में सभी डायट प्रवक्तागण, बेसिक के ए० आर० पी० व शिक्षकगण, डायट के प्रशिक्षु एवं डायट का अन्य स्टाफ मौजूद थे। इस महोत्सव कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन प्रवक्ता डायट डॉ० गोरेलाल द्वारा किया गया।

राज कुमार शर्मा (प्रधानाध्यापक)
उच्च प्राथमिक विद्यालय चित्रवार
मऊ, चित्रकूट

अच्छी रेखा को लम्बा करना

तकनीकी एक ऐसी सच्चाई है जिससे न तो भागा जा सकता है न ही मुँह छिपाया जा सकता है। वस्तुतः इसके साथ चलना व इसका सदुपयोग ही हमें उचित दिशा में ले जा सकता है। संचार क्रांति ने सोशल मीडिया का गाँवों में तेजी से प्रसार कर दिया है। स्मार्टफोन भी अब सर्वसुलभ है। लाइक, कमेंट, शेयर, रीच की भूख और नाममात्र की सेंसरशिप ने बच्चों तक उस कंटेंट को भी पहुँचा दिया है जिसे सार्वजनिक पोर्टल पर आना तक नहीं चाहिए था।

ऐसे कंटेंट ने सर्वाधिक असर बच्चों की भाषा और व्यवहार पर डाला है। आज बच्चों की भाषा और संस्कार बिगड़ते जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि बालमन अनुसरण करने के लिए सर्वाधिक अनुकूल होता है। शिक्षक बच्चों के इसी गुण का लाभ उठाकर उन्हें अच्छी बातें सिखाते हैं लेकिन वहीं अनुपयुक्त कंटेंट बच्चों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं।

ऐसे कंटेंट जिसमें दूसरों को धमकाने की बात हो, जातिगत श्रेष्ठता का बखान हो वो बच्चों को आकर्षित करते हैं और फिर बच्चे वैसे ही आचरण करने की ओर अग्रसर होते हैं। जोकि बच्चों के भविष्य के लिए कहीं से भी उपयुक्त नहीं है। बच्चों को ऐसे कंटेंट से बचने के लिए शिक्षक निर्देशित तो करते हैं परन्तु उनके सीसीटीवी कैमरे तो नहीं बन सकते न। पर इस समस्या का कोई हल भी तो होना चाहिए।

हम सबने बचपन में वो कहानी पढ़ी/सुनी ही है कि जब एक रेखा को बिना काटे या मिटाए छोटा करना था तब उस रेखा के पास में एक बड़ी रेखा खींच दी गयी इससे पहली रेखा छोटी हो गयी। इस समस्या का समाधान भी वही है। सोशल मीडिया पर अश्लील, भौंडे और असभ्यता भरे कंटेंट के प्रत्युत्तर में अच्छे, संस्कारित और सभ्य भाषा से भरे कंटेंट शिक्षकों को सोशल मीडिया पर अपलोड करने चाहिए।

"सोशल मीडिया पर रील/शॉर्ट्स बनाना हम शिक्षकों का कार्य नहीं" ऐसा कहकर हम अपने उत्तरदायित्व से भाग नहीं सकते। आने वाली पीढ़ी को उन लापरवाह कंटेंट क्रिएटर के सहारे नहीं छोड़ा जा सकता जो अधिक से अधिक धन कमाने के लिए उल-जलूल कंटेंट परस रहे हैं। हमने सुना/पढ़ा है कि "जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब ईश्वर अवतार लेते हैं।" फिर हम तो शिक्षक हैं जिसका स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना गया है। क्या अपने विद्यार्थियों को उचित मार्ग पर लाने के लिए हम अपने में थोड़ा परिवर्तन नहीं ला सकते?

यू ट्यूब/फेसबुक/व्हाट्सएप का प्रयोग सभी शिक्षक करते हैं। इस पर कंटेंट बनाना या भेजना बहुत ही सरल है। थोड़े से प्रयास से हम अपनी बात पल भर में ही प्रसारित कर सकते हैं। हमें सोशल मीडिया को अच्छे कंटेंट से भरना ही होगा। हमें अच्छे और सुसंस्कारित करने वाले कंटेंट की रेखा इतनी बड़ी करनी ही होगी कि बुरे कंटेंट की रेखा छोटी और धूमिल पड़ जाये।

प्रांजल सक्सेना
जनपद - बरेली

TLM Name- Save Earth Model

Subject- Our Environment

Class- Primary Level

Material used- Hard board, coloured sheets, markers, sketch pens,cello tape, glue etc.

Utility- Students will learn about our healthy and fresh environment. They will try various efforts to make our earth clean and safe.

TLM Made By- Dr. Neetu Shukla

Dr. Neetu Shukla (H.T.)
Model Primary School Bethar-1
S. Karan, Unnao

ट्रेन बनाओ, मुहावरे सुनाओ, अर्थ समझाओ

शिक्षक होने के नाते हम सभी यह जानते हैं कि हम जितना भी पढ़ाते हैं, सभी बच्चे अपनी ग्रहण क्षमता के अनुसार ही उसे ग्रहण करते हैं। जैसे कि कुछ बच्चे जल्दी सीख जाते हैं जबकि कुछ को सीखने में अधिक समय लगता है। यदि हम पढ़ाई को खेल के रूप में या गतिविधि के रूप में कराते हैं तो जिन बच्चों की ग्रहण क्षमता कम है, वे भी उसको कम समय में आत्मसात कर पाते हैं। हिन्दी व्याकरण के अंतर्गत मुहावरों को सिखाने के लिए हम यह नवाचार कर सकते हैं जिससे कि बच्चों की न केवल मुहावरा बोलने की क्षमता विकसित होगी अपितु वे उसका अर्थ समझ कर उनको सही जगह व्यक्त कर पाएँगे। इस नवाचार के माध्यम से बच्चों की भाषा शैली और भी सुदृढ़ हुई है।

कक्षा/विद्यालय में अनुप्रयोग- यह नवाचार छह से 12 तक की किसी भी कक्षा में छात्रों के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

आवश्यक सामग्री :- यह एक शून्य निवेश आधारित नवाचार है। श्वेतबोर्ड पर मुहावरे और उनका अर्थ लिखकर बच्चों को याद कराया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पुराने पड़े शादी के कार्डों पर मुहावरे और उनके अर्थ लिखकर फ़्लैश कार्ड बनाए जा सकते हैं।

अनुप्रयोग :- इस खेल के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे ध्यान से पढ़ें। पीयर लर्निंग के तहत जिन बच्चों ने अच्छे से याद कर लिया है, उनको हम ट्रेन के डिब्बे बना देंगे। शिक्षक स्वयं इंजन बनकर ट्रेन बनाएगा और कोई एक मुहावरा डिब्बे बने बच्चों से पूछता जाएगा। डिब्बे बने बच्चे उन मुहावरों का अर्थ व वाक्य प्रयोग बताते जाएँगे और छुक छुक करके ट्रेन आगे बढ़ाते जाएँगे।

लाभ :-

1- खेल खेलने का अवसर पाने के लिए बच्चे बहुत ध्यान से पढ़ते हैं।

2- पीयर लर्निंग से बच्चे एक दूसरे से अधिक सहजता से सीख पाते हैं।

3- समूह में कार्य करना सीखते हैं एवं मैत्रीभाव सुदृढ़ होता है।

4- मुहावरों का सही प्रयोग करने में सक्षम होते हैं एवं भाषा शैली सुदृढ़ होती है।

5- नेतृत्व क्षमता विकसित होती है।

6- मानवीय मूल्यों को समझने में व अधिक व्यवहार कुशल होते हैं।

शुचि वार्ष्णेय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय दियौराखास
ब्लॉक- बनियाखेड़ा, जनपद- संभल

In today's modern era, the field of education is constantly evolving, and English medium schools play a vital role in this progress. These schools use English as the medium of instruction, which is widely accepted as a global language. English medium schools not only teach the language but also prepare children to compete at an international level.

Advantages of English Medium Schools :-

1. Proficiency in a Global Language: Education in English medium schools enables students to become proficient in English, helping them communicate effectively at a global level.

2. Better Career Opportunities: Today, most higher education institutions and corporate companies prefer individuals who are fluent in English. As a result, students from English medium schools often have better career prospects.

3. Increased Self-Confidence: Knowledge of the English language boosts students' self-confidence. They can participate fearlessly in various competitions, speeches. and presentations.

4. Ease in Accessing Technical Knowledge: Most scientific research, technical documents, and internet content are in English. Students from English medium schools can easily access and understand this knowledge.

Challenges :-

Despite offering several benefits, English medium schools also face some challenges. In rural areas, the number of such schools is limited. Sometimes, the importance of the mother tongue is neglected, which may create a disconnect between children and their cultural roots.

Conclusion :-

English medium schools have become a necessity in today's time. They provide not only a better educational system but also prepare students for future challenges. However, it is equally important to give proper importance to the mother tongue and culture so that children remain connected to their roots while embracing modernity.

Sunil Kumar (A.T.)
P. M. Shri P. S. Dhanaura Silver Nagar -1
(English Medium)
Block And District - Baghpat

मोरारजी देसाई

मोरारजी देसाई एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री थे, जो अपने दृढ़ सिद्धांतों, भ्रष्टाचार विरोधी रुख और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं। वे भारत की स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्ध थे और उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

मोरारजी देसाई भारत के चौथे प्रधानमंत्री थे। वहऐसेप्रथम प्रधानमंत्री थे जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बजाय अन्य दल से थे। वही एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान "भारत रत्न" एवं पाकिस्तान के सर्वोच्च सम्मान "निशान - ए- पाकिस्तान" से सम्मानित किया गया था।

मोरारजी देसाई का जन्म 29 फरवरी 1896 को गुजरात प्रांत के भदौली नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता एक शिक्षक थे एवं बेहद अनुशासन प्रिय थे। बचपन से ही मोरारजी देसाई अपने पिता से सभी परिस्थितियों में कड़ी मेहनत करने एवं सच्चाई के मार्ग पर चलने की सीख ली। विद्यार्थी जीवन में मोरारजी देसाई औसत बुद्धि के विवेकशील छात्र थे। तत्कालीन बंबई प्रांत के विल्सन सिविल सेवा से 1918 में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने 12 वर्षों तक डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्य किया।

वे सांप्रदायिक सद्भाव के मजबूत समर्थक थे और उन्होंने सभी समुदायों के बीच शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रयास किया। वे सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध थे और उन्होंने गरीबों और वंचितों के उत्थान के लिए प्रयास किया। वे आर्थिक सुधारों के समर्थक थे और उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने का प्रयास किया। उन्होंने स्वमूत्र आंदोलन चलाया था, जिसमें वे अपना मूत्र पीने का दावा करते थे और इसे सेहत के लिए फायदेमंद मानते थे।

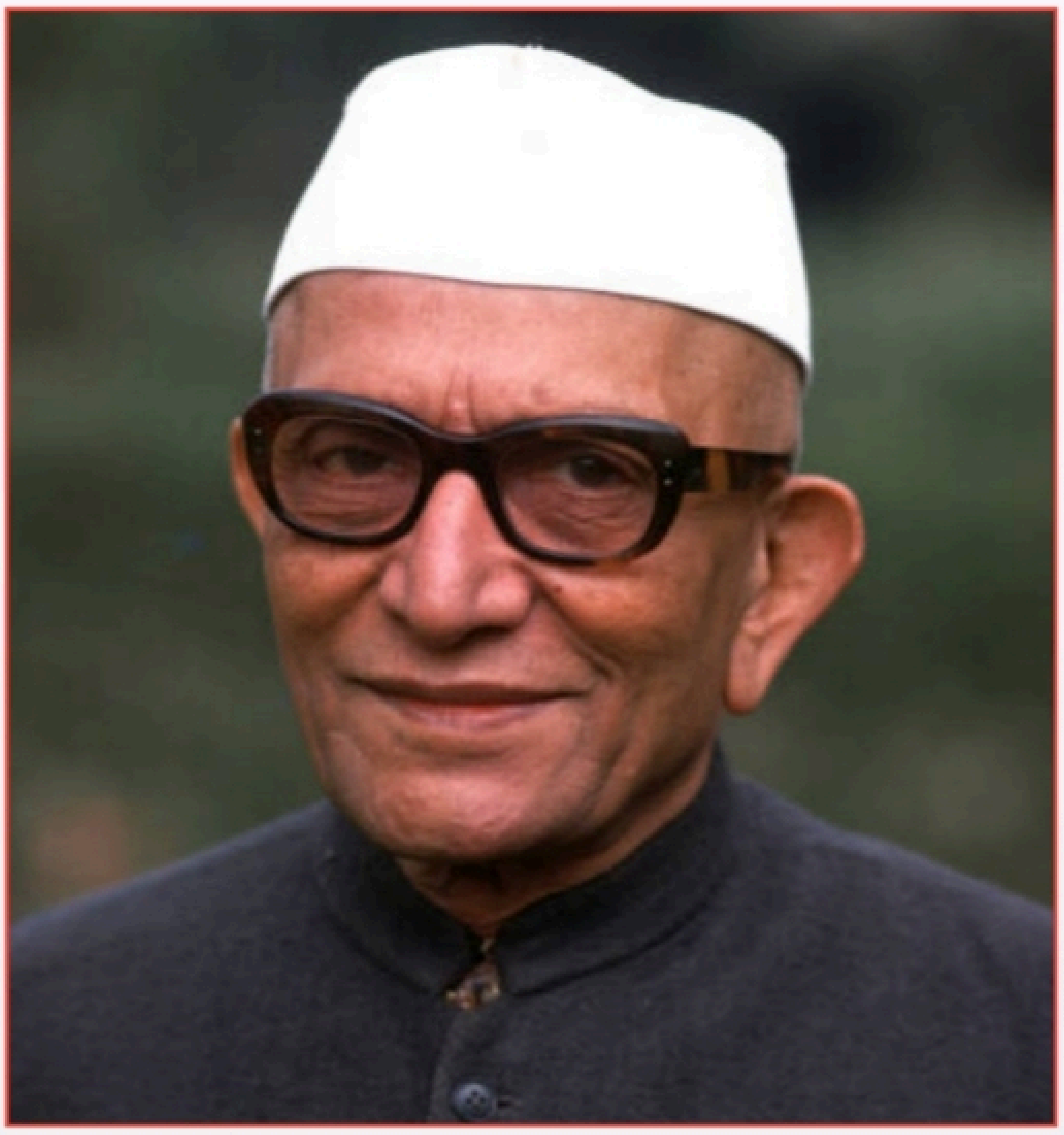

श्री देसाई जी को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तीन बार जेल जाना पड़ा। उन्होंने पहली बार 1937 में राजनीतिक कार्यभार संभाला तथा राजस्व, कृषि, वन एवं सहकारिता के मंत्री बने। 1946 में राज्य विधानसभा के चुनाव के बाद मुंबई में गृह एवं राजस्व मंत्री बने। अपने कार्य के दौरान श्री देसाई ने "हलवाहा के लिए भूमि" प्रस्ताव के लिए सुरक्षा काश्तकारी प्रदान कर भू राजस्व में कई दूरगामी में सुधार किए तथा वर्ष 1952 में मुंबई के मुख्यमंत्री बने।

राज्यों को पुनर्गठित करने के बाद श्री देसाई 14 नवंबर 1956 को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के रूप में केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हुए। तथा 22 मार्च 1958 में वित्त मंत्रालय का कार्यभार संभाला। 1967 में श्री देसाई भारत के उप प्रधानमंत्री हुए।

आपातकाल के बाद 1977 में आयोजित छठवीं लोकसभा आम चुनाव में श्री देसाई गुजरात के सूरत निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए।

बाद में उन्हें सर्वसम्मति से संसद में जनता पार्टी के नेता के रूप में चुना गया एवं 24 मार्च 1977 को उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

"जब तक भारत देश का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा, तब तक हम सभी यह नहीं कह सकते कि भारत देश में स्वराज है।" - मोरारजी देसाई

अंजू लता पटेल (स०अ०)
पी० एम० श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा
वि० ख०- मझवा, जनपद- मीरजापुर

मोरारजी देसाई का आत्मसंयम और अनुशासन

भारत के चौथे प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई अपनी ईमानदारी, आत्मसंयम और कठोर अनुशासन के लिए प्रसिद्ध थे। उनके जीवन से जुड़ा एक कम प्रसिद्ध किंतु प्रेरक प्रसंग उनके प्रशासनिक सिद्धांतों और सादगी को दर्शाता है।

प्रसंग : - जब मोरारजी देसाई बंबई प्रांत (आज का महाराष्ट्र और गुजरात) के मुख्यमंत्री थे, तब एक बार उनके एक करीबी मित्र ने उनसे अनुरोध किया कि उनके किसी संबंधी को सरकारी नौकरी दिलवा दें। मित्र ने कहा, "अगर आप चाहें तो एक सिफारिश से यह काम हो सकता है।" मोरारजी देसाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "अगर वह योग्य हैं, तो उन्हें खुद ही नौकरी मिल जाएगी और यदि वे योग्य नहीं हैं, तो मेरा समर्थन भी उन्हें यह नौकरी नहीं दिला सकता।"

प्रेरणा : - यह घटना बताती है कि मोरारजी देसाई कभी भी भाई-भतीजावाद या सिफारिश की राजनीति में विश्वास नहीं रखते थे। वे अपने सिद्धांतों के पक्के थे और प्रशासन में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध थे। उनके इस आत्मसंयम और अनुशासन से हमें यह सीख मिलती है कि सफलता और नेतृत्व के लिए ईमानदारी और निष्पक्षता अत्यंत आवश्यक है।

प्रसंग :- मोरारजी देसाई और सादगी का पाठ

जब मोरारजी देसाई भारत के प्रधानमंत्री (1977-1979) थे, तब एक बार एक विदेशी प्रतिनिधिमंडल उनसे मिलने आया। प्रतिनिधिमंडल ने देखा कि प्रधानमंत्री आवास में अत्यधिक सादगी है। महँगे फर्नीचर की जगह साधारण लकड़ी की कुर्सियाँ थीं और कोई भव्य सजावट नहीं थी। बैठक के दौरान एक विदेशी राजनयिक ने उनसे मजाकिया लहजे में कहा, "श्रीमान प्रधानमंत्री, आपके निवास का फर्नीचर बहुत ही साधारण है। क्या आपको इसे थोड़ा भव्य नहीं बनाना चाहिए?" मोरारजी देसाई ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "भारत एक विकासशील देश है। मैं जनता के पैसे का

दुरुपयोग नहीं कर सकता। जब देश की जनता संघर्ष कर रही है, तो मेरा भव्य जीवन जीना अनुचित होगा।"

प्रेरणा :- यह घटना मोरारजी देसाई की सादगी, ईमानदारी और राष्ट्र के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने कभी भी पद और प्रतिष्ठा का दुरुपयोग नहीं किया और हमेशा एक अनुशासित जीवन जिया। यह प्रसंग हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व भव्यता में नहीं, बल्कि आदर्शों और नैतिक मूल्यों में निहित होता है।

संदर्भ :- यह घटना उन कई संस्मरणों और जीवनीकारों द्वारा उल्लेखित है जो मोरारजी देसाई के सादगीपूर्ण जीवन और प्रशासनिक ईमानदारी पर प्रकाश डालते हैं। उनका संपूर्ण जीवन एक मिसाल है कि कैसे एक नेता अपने आचरण से भी समाज को प्रेरित कर सकता है।

प्रसंग :- मोरारजी देसाई का ईमानदारी का पाठ

जब मोरारजी देसाई वित्त मंत्री (1958-1963) थे, तब एक बार एक बड़े औद्योगिक समूह के प्रमुख ने उनसे मुलाकात की। उद्योगपति ने एक महत्वपूर्ण सरकारी अनुबंध प्राप्त करने के लिए उन्हें एक **महँगा** उपहार भेंट करना चाहा।

देसाई ने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा, "अगर आप यह अनुबंध अपनी योग्यता के आधार पर चाहते हैं, तो आपकी कंपनी पर विचार किया जाएगा। लेकिन यदि यह उपहार इसकी शर्त है, तो आप इसे वापस ले जाएँ।" वह उद्योगपति चौंक गया और बोला, "लेकिन यह सिर्फ एक भेंट है, इसमें कुछ गलत नहीं है।" इस पर मोरारजी देसाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "सरकारी सेवा में रहते हुए मैं निजी उपहार स्वीकार नहीं कर सकता। मैं जनता की सेवा कर रहा हूँ, न कि किसी विशेष व्यक्ति या कंपनी की।"

प्रेरणा :- यह घटना उनकी अडिग ईमानदारी, नैतिकता और निष्पक्ष प्रशासन को दर्शाती है। उन्होंने कभी भी अपने पद का दुरुपयोग नहीं किया और न ही किसी अनुचित प्रस्ताव को स्वीकार किया। यह प्रसंग हमें सिखाता है कि "सच्चा नेतृत्व नीतियों और मूल्यों से बनता है, न कि समझौतों और विशेषाधिकारों से।"

संदर्भ :- इस तरह की कई घटनाएँ मोरारजी देसाई की आत्मकथा "The Story of My Life" और अन्य जीवनी पुस्तकों में उल्लेखित हैं।

हेमन्त कटारा (प्रधानाध्यापक)
मॉडल प्राइमरी स्कूल गंगौल
विकास खण्ड व जनपद- हाथरस

रामकृष्ण परमहंस - विचारों के सागर

रामकृष्ण परमहंस के विचार भारतीय साधना और अध्यात्म का अद्वितीय रूप प्रस्तुत करते हैं। उनका जीवन सत्य, प्रेम और भक्ति का प्रतीक था। रामकृष्ण परमहंस का मानना था कि सभी धर्मों का उद्देश्य एक ही है- ईश्वर की प्राप्ति। उन्होंने कहा, "ईश्वर एक है, वह न किसी धर्म विशेष में बँधा है, न किसी रूप में सीमित है।" उनका जीवन भक्ति, तपस्या और समाधि में व्यतीत हुआ, जिससे उन्होंने यह सिद्ध किया कि किसी भी धर्म या पंथ से ऊपर उठकर, व्यक्ति को परम सत्य की प्राप्ति हो सकती है।

रामकृष्ण परमहंस ने जीवन को सरलता और निस्वार्थ भाव से जीने की शिक्षा दी। उनका यह भी मानना था कि इंसान को अपने अन्दर की दिव्यता को पहचानना चाहिए और सच्चे प्रेम से सभी जीवों के साथ व्यवहार करना चाहिए। उन्होंने ध्यान और साधना को महत्व दिया और अपने अनुयायियों को यह सिखाया कि आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने अहंकार को समाप्त करना चाहिए। उनके विचारों ने स्वामी विवेकानंद जैसे महान व्यक्तित्वों को प्रेरित किया, जो उनके विचारों को विश्वभर में फैलाने का कार्य कर रहे थे।

रामकृष्ण परमहंस के विचारों में शिक्षा का विशेष स्थान था। उन्होंने शिक्षा को आत्मा की उन्नति और ईश्वर के प्रति जागरूकता के रूप में देखा। उनके अनुसार, सही शिक्षा केवल पुस्तक ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह आत्मज्ञान और जीवन के उद्देश्य को समझने की दिशा में मार्गदर्शन करती है। रामकृष्ण परमहंस का मानना था कि शिक्षा का असली उद्देश्य व्यक्ति के भीतर छिपी दिव्यता को जागृत करना है। वे कहते थे कि आत्मज्ञान और सत्य की प्राप्ति के लिए केवल बाहरी ज्ञान ही नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और ध्यान की आवश्यकता होती है।

उनका यह भी विचार था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज की भलाई और सच्चे मानवता के मार्ग पर चलना है। वे भक्ति और साधना को भी शिक्षा का अहम हिस्सा मानते थे, क्योंकि वे मानते थे कि व्यक्ति जब अपने भीतर ईश्वर को अनुभव करता है, तो वही सच्ची शिक्षा है।

रामकृष्ण परमहंस ने यह भी सिखाया कि शिक्षा जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और अपने कर्मों में ईश्वर का अनुभव करने के लिए होनी चाहिए। उनके अनुसार, ज्ञान और भक्ति का समन्वय ही सच्ची शिक्षा है।

अन्त में-

वो कहते थे, "हर दिल में बसा है ईश्वर का रूप।" उनकी शिक्षाओं ने हमको दिया है जीवन का सूत्र।

"स्वयं को पहचानो, यही जीवन का है मर्म,
रामकृष्ण ने सिखाया मानवता की सेवा है सच्चा धर्म।"

अंजली मिश्रा (स०अ०)
कंपोजिट विद्यालय टिकरा
विकास क्षेत्र- देवमई, जनपद- फतेहपुर

विज्ञान प्रदर्शनी

दिनांक 28/02/2025 को कंपोजिट विद्यालय औरंगाबाद, ब्लॉक- लखावटी, जनपद- बुलन्दशहर में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर सर सी० वी० रमन को याद करते हुए श्रीमती भारती मांगलिक (इं०प्र०अ०) के मार्गदर्शन में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में विज्ञान शिक्षिका श्रीमती गीता रानी का उस दिन विभागीय प्रशिक्षण में होने पर भी विशेष सहयोग रहा। छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि वैज्ञानिक दृष्टिकोण व तार्किक विश्लेषण विकसित करने हेतु श्रीमती गीता रानी एवं श्रीमती भारती मांगलिक (इं०प्र ०अ०) के मार्गदर्शन में विद्यालय स्तर पर वर्ष 2020 से विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है।

वर्ष 2020 में कोरोना आक्रमण से पहले माह फरवरी में विज्ञान शिक्षिका श्रीमती गीता रानी के मार्गदर्शन में कुछ चार्ट्स, मॉडल्स के द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गयी। छात्रों की करके सीखने की रुचि व उनके विज्ञान के प्रति रुझान को देखकर कोरोना के पश्चात जब विद्यालय खुले तो पुनः विज्ञान दिवस पर एग्जिबिशन लगायी गयी। इस कार्यक्रम में कक्षा 3 से कक्षा 8 तक के छात्रों ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया।

वर्ष 2023 में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में तत्कालीन खंड शिक्षा अधिकारी श्री विकास कुमार ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति में छात्रों से वर्किंग मॉडल्स व प्रयोगों के विषय में पूछा। साथ-साथ खण्ड शिक्षा अधिकारी जी ने बच्चों का मार्गदर्शन भी किया। उनके सहयोगात्मक रवैए से सभी छात्र बेहद उत्साहित थे। तत्पश्चात उन्हीं से प्रेरित हो विद्यालय की छात्रा कु० तमन्ना ने राष्ट्रीय आविष्कार अभियान में "पराली प्रबंधन" पर मॉडल बना खूब प्रशंसा बटोरी तथा जनपद पर तृतीय स्थान प्राप्त कर नकद 2500/- रूपये धनराशि पुरस्कार स्वरूप प्राप्त कर विद्यालय व ब्लॉक का नाम रोशन किया।

सत्र 2024-25 में छात्र इंशा ने "पलास्टिक फ्री रिवोल्यूशन" विषय पर मॉडल तैयार कर राष्ट्रीय आविष्कार अभियान में भाग लिया। निर्णायक मंडल ने मॉडल की प्रशंसा की व मीडिया द्वारा विद्यालय के इस मॉडल को समाचार पत्र में भी छापा गया, जिससे छात्रों में उत्साहवर्धन हुआ। छात्रों ने प्रकाश का अपवर्तन, चुंबकीय रेखाएँ, आहद का राहत कूलर, श्री अन्न, हेल्थ एंड हाइजीन, प्लास्टिक फ्री रिवोल्यूशन, सूर्य व चंद्र ग्रहण, एसिड व बेस की पहचान, संचालक व कुचालक वस्तुएँ, श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, सूक्ष्मदर्शी व अन्य अनेकों चार्ट, मॉडल और प्रयोगों के द्वारा प्रदर्शनी को सफल बनाया। विज्ञान आधारित इस कार्यक्रम में ए० आर० पी०,एस० एम० सी० सदस्यों और अभिभावकों की उपस्थिति ने सामुदायिक सहभागिता को चरितार्थ किया।

मिशन शिक्षण संवाद के 'पढ़ाई से प्रतियोगिता तक' अभियान के सहयोग से विद्यालय से पिछले तीन वर्षों में तीन छात्रों का चयन राष्ट्रीय आय एवं छात्रवृति आधारित योजना में हुआ है। भविष्य में भी हम छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक सोच विकसित करने हेतु प्रयासरत रहेंगे।

भारती मांगलिक (इं०प्र०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय औरंगाबाद (1-8)
ब्लॉक- लखावटी, जनपद- बुलन्दशहर

ये देश हमारा है

किशोरावस्था ऐसी अवस्था होती है जब किशोर का तन मन ऊर्जा से परिपूर्ण होता है। इस ऊर्जा को यदि सही दिशा मिल जाए तो उनका भविष्य बन जाता है। इसलिए आवश्यक है कि ऐसी आयु में उन्हें उन कहानियों की ओर मोड़ा जाए जो उनमें सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न कर सकें। बाल और किशोर मन को बहुत अच्छे से समझने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार संजीव जायसवाल 'संजय' की पुस्तक ये देश हमारा है किशोरों के लिए ऐसी ही प्रेरणादायी पुस्तक है।

फ्लाइड्रीम्स पब्लिकेशन्स से प्रकाशित उपरोक्त पुस्तक कर्नल भवानी सिंह, कैप्टन ज्ञानेन्द्र वर्मा और उनसे प्रशिक्षण लेने वाले चार एनसीसी कैडेट की है। सक्षम, अक्षय हार्दिक और आराध्या कैप्टन ज्ञानेन्द्र वर्मा के साथ हिमालय की बर्फीली घाटियों में एनसीसी के शिविर के लिए हेलीकॉप्टर से जा रहे होते हैं लेकिन अचानक हेलीकॉप्टर में खराबी आने के कारण वह क्रेश हो जाता है। कैप्टन ज्ञानेन्द्र वर्मा सभी बच्चों को निर्देशित करते हैं कि उन्हें किस प्रकार अपनी जान बचानी है। सही समय पर वे सभी हेलीकॉप्टर से कूद जाते हैं और दूर भाग जाते हैं इससे उनकी जान बच जाती है लेकिन वह जिस स्थान पर पहुँचते हैं वहाँ कुछ देश विरोधी गतिविधियाँ हो रही होती हैं और वहाँ के आदिवासी गतिविधियों में अज्ञानता वश देशद्रोहियों का साथ दे रहे होते हैं। लेकिन चारों बच्चों की समझदारी से अंततः आदिवासी न केवल सही मार्ग पर आते हैं बल्कि साथ ही साथ देशद्रोहियों को पड़कवा भी देते हैं।

इस पुस्तक में बीच-बीच में बच्चों की आपसी नोंकझोंक भी है जो कहानी को रोचक बनाती है। बच्चों के अंदर की देशभक्ति का जज्बा देखते ही बनता है। हर पुस्तकालय में ऐसी पुस्तक होनी ही चाहिए। इस पुस्तक में बीच-बीच में बच्चों की आपसी नोंकझोंक भी है जो कहानी को रोचक बनाती है। हर पुस्तकालय में ऐसी पुस्तक होनी ही चाहिए।

प्रांजल सक्सेना
जनपद- बरेली

बाल कविता

It's time for School

Get up early,
Take a bath.
Put on uniform,
Carry your bag,

Be excited for School,
School is full of fun.
Many Cradles put to use.

Smart class makes us gain,
Computer classes always entertain.
In Science Lab Practicals done.

Drawing classes make fun,
Competitions are our assessments.
We always won laurels.

Our school number one,
Our school number one.

Bhoomi (Class-IV)
P.M. SHRI U.P.S DABRAI
FIROZABAD

बाल कहानी

शहरों में वायु प्रदूषण

एक समय की बात है एक शहर में दो भाई-बहन राजू, प्रिया और उनके दो मित्र रोहित और जानवी रहते थे। राजू, प्रिया और उनके मित्रों ने शहर में घूमने की योजना बनायी। वे चारों अगले दिन शहर में घूम ही रहे थे कि तभी प्रिया ने देखा कि वहाँ के वातावरण में बहुत सारा धुआँ फैला हुआ था। प्रिया ने अपने भाई राजू से पूछा कि यह धुआँ कहाँ से आ रहा है? राजू ने बताया प्रिया यह धुआँ फैक्ट्री, कारखानों तथा वाहनों आदि से निकल रहा है। यह धुआँ हमारे जीवन और वातावरण के लिए बहुत हानिकारक होता है। यह धुआँ वायु प्रदूषण के अंतर्गत आता है। रोहित ने पूछा कि यह वायु प्रदूषण क्या होता है? राजू ने कहा कि जब वायुमण्डल में बाह्य स्रोतों से धूल, धुआँ, गैस व दुर्गंध आदि की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे मानव जीवन और सम्पत्ति को नुकसान होता है तो इसे वायु प्रदूषण कहते हैं। जानवी ने पूछा कि यह किस कारण होता है? राजू ने बताया कि यह प्रदूषण वाहनों, कारखानों, प्राकृतिक आपदा जैसे ज्वालामुखी विस्फोट, पटाखों से निकलने वाले धुएं से तथा पॉलिथीन कूड़ा-कचरा आदि के जलाने से होता है। जानवी, रोहित, प्रिया तीनों ने अचानक राजू से पूछा कि यह धुआँ हमारे और हमारे वातावरण के लिए क्यों हानिकारक है? राजू ने कहा कि वाहनों व कारखानों से विभिन्न प्रकार की हानिकारक गैस निकलती है। जो हमारी साँस द्वारा शरीर में पहुँचकर हमारे शरीर को अनेक बीमारियों से ग्रसित कर देती है जैसे दमा, टी० वी०, एलर्जी, व डिफ्थीरिया आदि।

राजू ने बताया कि यह प्रदूषण पेड़-पौधों के कटने से भी होता है। अधिक से अधिक पेड़-पौधे काटने के कारण ऑक्सीजन गैस की मात्रा कम तथा अन्य अशुद्ध गैसें वायुमण्डल में बढ़ती जा रही हैं जो हमारे वायुमण्डल को प्रदूषित कर रही हैं। रोहित ने पूछा कि यह वायु प्रदूषण कैसे कम किया जा सकता है? राजू ने बताया कि वायु प्रदूषण कम करने के लिए हमें लोगों को जागरूक करना होगा कि वे अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगायें, पेड़-पौधों को न काटें, तथा कम से कम पॉलिथीन का उपयोग करें और कपड़े की थैली का अधिक प्रयोग करें, पटाखों को सार्वजनिक स्थानों पर न छोड़ें तथा वाहनों की जाँच कराकर धुएँ को नियंत्रित रखें और फैक्ट्री या कारखानो को शहरों से दूर बनवायें तथा कारखानों की चिमनियों को फिल्टर युक्त कराएँ। ऐसा करने से वायु प्रदूषण कम होगा। सभी ने ये बातें सुनकर यह निश्चय किया कि हम सभी अपने-अपने स्तर से वायु प्रदूषण कम करने का प्रयास करेंगे और अपने वातावरण को स्वच्छ और शुद्ध बनाएँगे।

संस्कार संदेश- हमें अपने आसपास के वातावरण को शुद्ध, स्वच्छ एवं साफ-सुथरा रखना चाहिए।

सोनम (कक्षा 8)
कस्तूरबा गांधी आ० बा० वि० पिवारी
ब्लॉक- मारहरा, जनपद- एटा

बच्चों को संदेश

वैसे तो हम जीवन में प्रतिदिन कुछ न कुछ नया सीखते हैं। जीवन में हर दिन परीक्षा देते हैं। जिंदगी के उतार-चढ़ाव जाने अनजाने हमें बहुत कुछ सिखा जाते हैं। हम सभी हर रोज जीवन की आपाधापी में तेज रफ्तार से सुबह से शाम तक दौड़ते रहते हैं और यह भूल जाते हैं कि रफ्तार ही हमें बहुत बड़ी सीख दे जाती है। इस वर्ष जो सीख मुझे मिली वह सीख है- 'ठहरने की सीख'। जी हाँ, जीवन में कुछ भी दौड़कर नहीं बल्कि ठहरकर मिलता है। हम आध्यात्म से दूर होते जा रहे हैं।

एक दिन मैंने छोटे बच्चे को सड़क पर साइकिल चलाते हुए गौर से देखा। जब सड़क पर स्पीड ब्रेकर आते तो बच्चा पैडल पर पैर मारना बंद कर देता और साइकिल बिना किसी परेशानी से ब्रेकर से होकर गुजर जाती है। बच्चा फिर से पैडल पर पैर मारने लगता है और साइकिल फिर से रफ्तार पकड़ लेती है। जरा सोचिए यदि बच्चा उस वक्त भी पैडल पर पैर मारता तो क्या होता? साइकिल अचानक उछल जाती और बच्चा गिर भी सकता था।

यह सड़क के स्पीड ब्रेकर हमारी जिंदगी में आने वाली परेशानियों और दुःखों की तरह ही होते हैं। उस वक्त हम ठहरते नहीं बल्कि और तेज हाथ पैर मारकर उस परेशानी से जल्दी से जल्दी निकलना चाहते हैं। नतीजा यह होता है कि हम अपनी परेशानियाँ और बढ़ा लेते हैं और अंत में दोष ईश्वर को देते हैं। यही वह वक्त है जब हमें थोड़ा शांत रहकर उस बुरे वक्त को निकल जाने देना है। वक्त का पहिया घूमता है। बुरा वक्त गुजर जाता है और जिंदगी फिर से सरपट दौड़ने लगती है, बच्चे की साइकिल की तरह।

डॉ० हिमांशु अग्रवाल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गढ़ी डहर
ब्लॉक- एत्मादपुर, जनपद- आगरा

मैं सुनीता कुमारी पी० एम० श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा सिल्वर नगर न०1, विकास क्षेत्र- बागपत, जनपद- बागपत में सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ। कुछ शब्दों में अध्यापिका बनने तक कि मेरी संघर्षशील कहानी इस प्रकार है-

मेरा जन्म अलीगढ़ जिले के एक गाँव में हुआ था। मेरे पिता दिल्ली में एक पी० जी० टी० सरकारी शिक्षक थे इसलिए मेरी सारी पढ़ाई-लिखाई दिल्ली में हुई है। बचपन से ही मेरा शिक्षक बनने का सपना था। मेरी पढ़ाई कक्षा 1 से 12 तक सरकारी स्कूल में हुई है। स्कूल में हर रोज मै मैडम को देखती और मेरे मन में विचार आते थे कि एक दिन मैं भी ऐसे ही बहुत अच्छी शिक्षक बनूँगी।

कक्षा 1 से 9 तक मेरी पढ़ाई-लिखाई बहुत अच्छे से चलती रही। दसवीं कक्षा में अचानक मेरी मम्मी का देहांत हो गया और मेरी जिंदगी में अचानक एक नया मोड़ आ गया। हम पाँच भाई-बहन थे। घर में बड़ी होने के कारण मुझ पर जिम्मेदारी आ गयी जिसकी वजह से मेरी पढ़ाई में थोड़ी परेशानी आने लगी थी, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। मैंने अपना हौसला बढ़ाया और मैं अपने घर के काम के साथ-साथ अपनी पढ़ाई में भी अव्वल रही।

पढ़ाई के साथ-साथ मैं खेलकूद, स्काउट गाइड, योग, ट्रैकिंग सभी में रुचि लेती और स्कूल के प्रति सहभागिता देती थी। स्कूल के सभी अध्यापक-अध्यापिका मुझे स्नेह करते थे। मुझे स्कूल से सभी शिक्षकों का मार्गदर्शन और हौसला मिलता रहता था। स्नातक के बाद मैंने बी० एड० किया और मैं एक शिक्षिका बन गयी।

मैं अपने स्कूल में एक अच्छी शिक्षिका हूँ। बच्चों के प्रति स्नेह रखती हूँ, उनका मार्गदर्शन करती हूँ, उनके साथ खेल में सक्रिय रहती हूँ, पढ़ाई के प्रति सचेत करती हूँ और सभी बच्चे मेरे साथ बहुत खुश रहते हैं।

महिलाओं ने किया साबित, उनसे अच्छा कोई शिक्षक नहीं

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च)

जागरण संवाददाता, बागपत: अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर ऐसी महिलाओं से रूबरू कराते हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रही हैं। एक शिक्षिका तो ऐसी हैं जिन्होंने राजकीय कालेज में दाखिले के लिए घर-घर जाकर बेटियों के स्वजन की मानमनोव्वल की। उनकी बदौलत आज बेटियां विद्यालय में पढ़कर अपने भविष्य की योजना तैयार कर रही हैं। दो परिषदीय विद्यालय की शिक्षिकाओं की मेहनत और लगन भी कुछ कम नहीं है।

खेल-खेल में शिक्षित बना रही सुनीता

पीएम श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा नंबर-1 में सहायक अध्यापिका सुनीता ने बचपन के सपने को सकार किया। सुनीता बताती हैं कि उसका सपना रहा कि शिक्षक बनकर बच्चों का भविष्य उज्ज्वल करें। यह सपना साकार हो रहा है।

बच्चों को पढ़ाई के साथ खेलकूद, योग और स्काउटिंग के बारे में बताती हैं। बच्चों के साथ खेलकूद की गतिविधियों में प्रतिभाग कराकर उनका मनोबल बढ़ा रही हैं। बेटियों को गुड टच और बैड टच के बारे में जागरूक करती हैं। आत्म सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया। खेल-खेल में विद्यार्थियों को शिक्षित बना रही हैं।

प्राथमिक विद्यालय धनौरा में विद्यार्थियों को खेल खिलाती शिक्षिका सुनीता● सौ. स्वयं

विभिन्न समाचार पत्रों ने समय-समय पर मेरे शिक्षण कार्य की सराहना प्रकाशित की है। जिससे मुझे अपने शिक्षण कार्य में और अधिक निखार लाने की प्रेरणा मिली है। मैं आगे भी अपने विद्यालय में बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए निरन्तर प्रयास करती रहूँगी, यही मेरा संकल्प है।

सुनीता कुमारी (स०अ०)
पी० एम० श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा न०-1
विकास क्षेत्र- बागपत, जनपद- बागपत

काव्य रूपांतरण

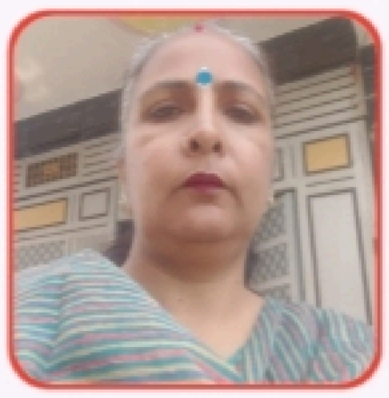

FLN (हिन्दी भाषा) प्रशिक्षण सार

शिक्षक भाई-बहनों को है ये अनमोल उपहार।
FLN प्रशिक्षण का इस कविता में है सार।।
कार्यपुस्तिका भाग-1 का बताती हूँ मैं इतिहास।
कक्षा-1 में डिकोडिंग कक्षा 2, 3 में पठन अभ्यास।।

कार्यपुस्तिका भाग-2 भी रखती है स्थान खास।
कक्षा 1 में पठन कक्षा 2, 3 में प्रवाहपूर्ण पठन विकास।।
पठन में शब्द उच्चारण ही नहीं अर्थ निर्माण भी है शामिल।
इससे बच्चा बन जाता है समझ बढ़ाने के काबिल।।

तीन चरण होते हैं पठन के इनका कर लो सभी मनन।
आदर्श, मार्गदर्शन और होता स्वतन्त्र पठन।।
प्रवाहपूर्ण पठन के बारे में प्रशिक्षण यह बतलाता है।
शब्दों की सटीकता, उचित गति प्रवाहपूर्ण पठन कहलाता है।।

पाठ की थीम, विषय वस्तु, घटनाओं के व्यवस्थित क्रम की गाँठ।
बच्चों के स्तर के अनुरूप बनाना है स्तरित पाठ।।
"मैंने सीख लिया" कार्यपत्रक के बाद आकलन भी कर लेना है।
आकलन के उपरान्त बच्चों का समूह भी बना लेना है।।

सावधिक आकलन की जगह हो गयी सावधिक पुनरावृत्ति स्थापित।
इसके लिए संदर्शिका में 13 वाँ और 20 वाँ सप्ताह है निर्धारित।।
संदर्शिका के भी तीन भागों की है उपयोगी नीति।
सैदान्तिक पक्ष, शिक्षण योजना और कालांशों की रणनीति।।

संदर्शिका में 25 सप्ताह की योजना है संकलित।
जो है सारंगी पुस्तक के पाठों से उचित संरेखित।
मौखिक भाषा विकास में प्रिन्ट सामग्री का करो सब उपयोग।
इसमें ही कर लेना कहानी, कविता, खेल गतिविधियों का योग।।

कक्षा 2 में सप्ताह 1-12, कक्षा 3 में 1 से सात।
इन सप्ताहों में होगा बच्चों का पूर्ण पठन अभ्यास।
कक्षा 2 में सप्ताह 14-25, कक्षा तीन में 8 से पच्चीस।
इन सप्ताहों में होंगे छात्रों में प्रवाहपूर्ण पठन लक्षण प्रदर्शित।।

प्रश्न पूछने पर बच्चे को दिया जाता है इन्तजार का समय।
8-10 सेकण्ड का सब बच्चों को मिलता है ये समय।
चार खण्डीय शिक्षण का है संदर्शिका में वर्णन।
मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग पठन और लेखन।।

GRR रखता है अपनी एक उम्दा क्वालिटी।
जिसको कहते हैं GRADUAL RELEASE OF RESPONSIBILITY ।।
जिम्मेदारियों का क्रमिक हस्तांतरण है इसका हिन्दी में नाम।
किसी भी दक्षता को सीखने में करता है ये महत्वपूर्ण काम।।

इसमें शिक्षक धीरे-धीरे बच्चों को सिखलाता है।
I do, we do, you do से प्रेरित हो बच्चा स्वतन्त्र रूप से सीख जाता है।।
आकलन व रिमीडियल शिक्षण से गुणवत्ता में बदलाव आया है।
दोनों ही तकनीकी से बच्चों में सुधार आया है।।

संघर्षशील बच्चों के लिए होती है जो योजना निर्माण।
रिमीडियल शिक्षण है देखो मिल गया उसको नाम।।
NCERT कक्षा 1 पाठ्य पुस्तक की जब करेंगे हम जाँच।
जिन पर है पुस्तक आधारित वो थीम संख्या में हैं पाँच।।

पाँचों के ही रखे गए हैं बहुत ही उम्दा नाम।
परिवार, जीव जगत, त्योहार और मेले, हरी-भरी दुनिया और हमारा खान-पान।।
पाठ्य पुस्तक में चार तरह के पाठ हैं एक-दूसरे के मीत।
आनंदमयी कविता, मिलकर पढें, सुनें कहानी और खेलगीत।।

विस्तारित गतिविधियों पर भी कर लेते हैं थोड़ी सी बात।
पाठ के पीछे की गतिविधियों की प्रकृति होती है इनका आधार।।
दक्षता पाने के लिए ज्यादा, जो अपनायी जाती विधियाँ।
वो ही कहलाती हैं भाई-बहनों विस्तारित गतिविधियाँ।।

सब चीजों से नजर हटाकर बस कर लो इतना ही ध्यान।
निपुण ब्लॉक बनाने के लिए देंगे हम इन सबको सही अंजाम।।
सभी सम्मानित शिक्षक साथी और आदरणीय BEO श्री उदित कुमार।
सबको सप्रेम भेंट ये कविता स्वीकार करो ये उपहार।।

अनीता राठी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय चौहल्दा
वि० क्षे०- बागपत, जनपद- बागपत

योग : सकारात्मक जीवन शैली

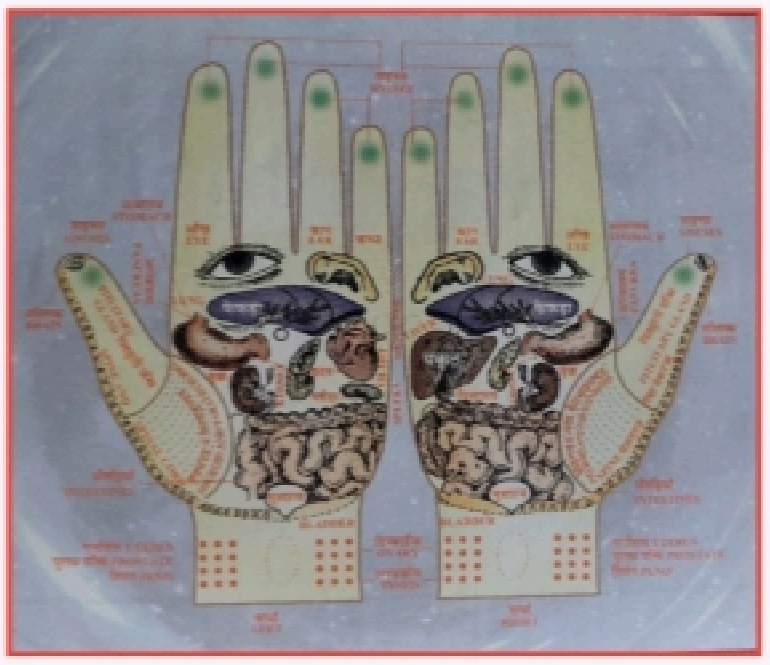

योग हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, अन्तर केवल हमारे जानने और समझने में है। जितना ज्यादा हम शारीरिक रूप से सक्रिय रहते हैं उतना ही हमारा जीवन योगपरक होता है और हम जीवन में सकारात्मक सोच और दिनचर्या को सहजता से अंगीकार कर पाते हैं। योग हमें सतत ऊर्जा प्रदान करता है और हमें शारीरिक और मानसिक रूप से बलवान बनाता है।

इसे मैं अपने जीवन के एक दृष्टांत से प्रस्तुत करना चाहूँगी। एक बार मेरे पिता ने कहा कि कपड़े हाथों से धुलने से केवल कपड़े ही नहीं साफ होते बल्कि हमारी शारीरिक ऊर्जा का स्तर भी उन्नत होता है। मैंने पूछा, कैसे? तो पिताजी ने कहा कि उन्होंने एक मजदूर को अपने मालिक के घर बोरा धुलाई का काम करते-करते पहलवानों की तरह मजबूत बनते देखा था। वह मजदूर रोज सौ सूती बोरे धोता था और उन बोरों को अपने हाथों से ऐंठते हुए निचोड़ता था। इसे ही वह अपने ताकतवर होने का राज बताता था। खानपान शुद्ध रखना तो एक जरूरत है लेकिन शारीरिक सक्रियता भी बहुत महत्वपूर्ण है। श्रम करना केवल ऊर्जा का प्रयोग करना नहीं है अपितु ऊर्जा का संचय करना भी है। इसीलिए हम देखते हैं कि शारीरिक श्रम करने वाले लोगों में जीवटता अधिक होती है। ज्यादा पैसे हमारी खुशियों का कारण हो सकते हैं, आधार नहीं। किन्तु स्वस्थ व ऊर्जावान शरीर निस्संदेह हमारी खुशियों का आधार है।

योग व प्राणायाम हमारे शरीर को स्वस्थ बनाने और हमें प्रसन्न रखने में अति सहायक हैं। यदि हम श्रमिक की भाँति श्रम नहीं कर सकते तो हमें कम से कम घर के दैनिक कार्यों में अवश्य हिस्सा लेना चाहिए और अपनी ऊर्जा का निवेश कर उसे और बढ़ाने की कोशिश करते रहना चाहिए। यदि ज्यादा न भी कर पाएँ तो कम से कम प्रतिदिन 10 से 15 मिनट अनुलोम-विलोम करने से प्राणवायु का संतुलन बनाये रखें और ध्यान की मुद्रा का 15 मिनट अभ्यास प्रतिदिन कर लें तो सोने पर सुहागा हो जाये।

मैं अब स्त्रियों की बात करुँगी। स्त्रियों का घर में झाड़ू लगाना भी उन्हें योग की एक विधा का लाभ पहुँचाता है। झाड़ू लगाते हुए उनके हाथों में झाड़ू की मूठ से बहुत ही अच्छी एक्युप्रेशर (accupressure) क्रिया होती है। अर्थात अनजाने में ही हम स्त्रियाँ एक तरह से योग कर रही होती हैं। योग की एक पुस्तक में मैंने पढ़ा है कि हमारे हाथों में भी विभिन्न रोगों के उपचार हेतु दबाव के बिन्दु (accupressure points) हैं, जिन पर एक क्रमिक विधि से निश्चित अवधि के लिए दबाव डालने की पद्धति से उपचार किया जाता है और हम स्त्रियाँ अपने दैनिक जीवन में ये साधारण रूप में करती रहती हैं।

मैं गौरवशाली हूँ कि हमारी भारतीय संस्कृति अपने लोक जीवन में योग को धारण किये हुए है। बस हम अपने बच्चों को ये सिखा पाएँ कि वे रोज 15 मिनट योगाभ्यास (विद्यालय में सीखकर भी) और घर के कुछ दैनिक कार्यों में भागीदारी करके स्वस्थ और प्रसन्न भी रह सकते हैं और अपनी माँ का हाथ बँटाकर उनका दिल भी जीत सकते हैं। सभी को मेरी शुभकामनाएँ!

आशा शर्मा (प्रधानाध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय सोनबरसा
विकास क्षेत्र- खड्डा, जनपद कुशीनगर

पारम्परिक खेल : काला डंडा

खेल का नाम- काला डंडा

खिलाड़ियों की संख्या-10

आज के इस स्मार्ट फोन के युग में बच्चे शारीरिक खेलों से दूर होते जा रहे हैं। बच्चे घंटों मोबाइल पर आभासी खेलों में लगे रहते हैं। कभी लेटकर कभी गलत मुद्रा में बैठकर मोबाइल गेम खेलते रहते हैं। गलत मुद्रा में बैठने और लगातार घंटों मोबाइल स्क्रीन देखते रहने से उनके शारीरिक स्वास्थ्य और आँखों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जिससे आँखों में जलन, आँखों की रोशनी कम होना, गर्दन में सर्वाइकल का दर्द आदि अनेक बीमारियाँ होने का खतरा बना रहता है।

80-90 के दशक में जब मोबाइल फोन नहीं थे उस समय हम अपने बचपन में घर से बाहर के कई प्रकार के स्थानीय खेल खेलते थे जैसे गुल्ली डंडा, पकड़म-पकड़ाई, आँख-मिचौली, आइस-पाइस, खो-खो, कुश्ती, कबड्डी आदि। इन खेलों को खेलने से हमारा शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ बनता था। कोई बीमारी पास नहीं आती थी। बच्चे हष्ट-पुष्ट और मानसिक रूप से भी सक्रिय रहते थे। पढ़ाई में भी मन लगता था। खेलकर जब थक-हारकर घर आते थे तो रात में नींद भी अच्छी आती थी। इन्हीं परम्परागत स्थानीय खेलों में से एक खेल था काला डंडा। आज हम इसी खेल के बारे में बात करते हैं।

खेल विधि-

एक पेड़ के पास गोल घेरा बनाएंगे उसमें एक डंडा रखेंगे। एक खिलाड़ी नीचे खड़ा होगा जो डंडे की सुरक्षा करते हुए अन्य खिलाड़ी को टच करेगा, जिसे सक्रिय खिलाड़ी कहेंगे। बाकी सभी खिलाड़ी इधर-उधर खड़े होंगे पेड़ पर भी चढ़ सकते हैं। सक्रिय खिलाड़ी को चकमा देकर अन्य कोई भी खिलाड़ी उस डंडे को गोले से उठाकर दूर फेंक देगा।

सक्रिय खिलाड़ी का काम है कि डंडा गोल घेरे में ही होना चाहिए और सक्रिय खिलाड़ी उसे डंडे की सुरक्षा करेगा, अन्य जगहों पर डंडा फेंकने पर पहले सक्रिय खिलाड़ी उस डंडे को उठाकर गोले में ही सुरक्षित रखेगा तभी वह अन्य खिलाड़ी को टच कर सकता है। जब डंडा गोल घेरे में होगा तब सक्रिय खिलाड़ी किसी भी अन्य खिलाड़ी को टच करके आउट कर सकता है। तब आउट वाला खिलाड़ी सक्रिय खिलाड़ी बन जाएगा और इस तरह खेल चलता रहेगा।

खेल से लाभ-

इस खेल से बच्चों की बड़ी मांसपेशियों की अच्छी कसरत होती है इसमें दौड़ने के भी अवसर मिलते हैं। बच्चों की सक्रियता बढ़ती है। मानसिक एकाग्रता में वृद्धि होती है। खेल भावना और समूह में कार्य करने की भावना का विकास होता है।

रीना रानी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय शिकोहपुर (1-8)
ब्लॉक- बागपत, जनपद- बागपत

बाल रत्न वार्षिक परीक्षा : एक परिचय

मिशन शिक्षण संवाद बाल रत्न वार्षिक परीक्षा क्या है?

मिशन शिक्षण संवाद एक समर्पित शैक्षिक पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना और उनकी बौद्धिक क्षमता को विकसित करना है। यह टीम प्रतिदिन शैक्षिक संवर्धन हेतु विभिन्न विषयों पर टॉपिक-वार वर्कशीट उपलब्ध कराती है और साथ ही उनके विस्तृत स्पष्टीकरण हेतु यूट्यूब चैनल पर वीडियो अपलोड करती है।

इसी शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर, बाल रत्न वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है, जिसमें छात्रों की ज्ञान और तर्कशक्ति का आकलन किया जाता है। इस परीक्षा को दो स्तरों पर आयोजित किया जाता है:

1. परीक्षा स्तर :-

प्राथमिक स्तर: कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए।

उच्च प्राथमिक स्तर: कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए।

2. परीक्षा का विषय-वस्तु और पाठ्यक्रम :-

प्राथमिक स्तर के विषय

हिन्दी, अंग्रेजी, सामान्य विज्ञान, तार्किक शक्ति, गणित।

उच्च प्राथमिक स्तर के विषय

हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक विषय, तार्किक शक्ति, गणित।

3. परीक्षा का उद्देश्य :-

छात्रों को आत्मनिर्भर एवं तर्कशील बनाना।

शिक्षण को रोचक और प्रतिस्पर्धात्मक बनाना।

ज्ञान वृद्धि और विश्लेषणात्मक क्षमता का परीक्षण।

डिजिटल शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देना।

4. परीक्षा का स्वरूप और आयोजन :-

परीक्षा ऑनलाइन आयोजित की जाती है।

MCQ आधारित प्रश्न होते हैं।

समय-सीमा में परीक्षा पूरी करनी होती है।

परीक्षा के बाद प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

5. बाल रत्न परीक्षा के लाभ :-

छात्रों की विषयगत समझ में सुधार।

डिजिटल शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाना।

आत्म-अध्ययन को बढ़ावा देना।

भविष्य की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी।

पढ़ाई से प्रतियोगिता तक | मिशन शिक्षण संवाद

क्रमांक- 38 जूनियर स्तर विषय- हिन्दी_व्याकरण

प्रकरण- अव्यय (अविकारी) शब्द

अव्यय (अविकारी) शब्द

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, पुरुष या काल के कारण विकार अथवा परिवर्तन नहीं आता वे अव्यय (अविकारी) शब्द कहलाते हैं।

जैसे----

(क) लड़का भरपेट भोजन करेगा।

(ख) लड़के भरपेट भोजन करेंगे।

(वचन-परिवर्तन)

(ग) लड़की भरपेट भोजन करेगी।

(लिंग-परिवर्तन)

(घ) लड़कियों ने भरपेट भोजन किया।

(कारक-परिवर्तन)

इन वाक्यों में 'भरपेट' शब्द में लिंग, वचन और कारक बदलने पर भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अतः यहाँ शब्द अविकारी या अव्यय शब्द है।

अव्यय (अविकारी) शब्दों के भेद

(क) क्रिया विशेषण

(ख) सम्बन्धबोधक

(ग) समुच्चयबोधक

(घ) विस्मयादिबोधक

(क) क्रिया-विशेषण -

जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे 'क्रिया विशेषण' कहलाते हैं

(क) लता मंगेशकर मधुर गाती है।

(ख) हम कल जाएँगे।

(ग) बंदर ऊपर बैठा है।

(घ) मोहित ज्यादा खाता है।

इन वाक्यों में रंगीन अक्षरों में छपे अव्यय शब्द क्रिया की रीति,काल व स्थान,मात्रा का बोध करा रहे हैं। अतः ये 'क्रियाविशेषण' हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद

क्रिया-विशेषण के निम्नलिखित चार भेद हैं।

(1) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

(2) कालवाचक क्रिया-विशेषण

(3) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(4) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

अनुच्छेद

मानसून के शुरू होने से कुछ पहले से ही कोयल की कूक सुनाई देने लगती है। सभी ने कोयल को गाते सुना होगा, पर हममें से कितनों ने उसे देखा है ? यह एक शर्मीला पक्षी है। आप कोयल को तभी देख सकते हैं जब वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ती है। तब आपको यह पता लगता है कि वह बहुत कुछ कौए की तरह है। उसी के रंग व आकार की, पर उससे अधिक पतली और उससे अधिक लम्बी पूंछ वाली। नर और मादा कोयल समान नहीं होते। नर कोयल चमकीले काले रंग का होता है। इसकी चोंच कुछ पीलापन लिए हरे रंग की होती है और आँखें गहरी लाल होती हैं। मादा कोयल गहरे लाल रंग की और सिर पर सफेद धब्बे वाली होती है।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसके उत्तर दीजिए-

1. आप कोयल को गाते हुए सुन सकते हैं-
(a) सूर्यास्त से पहले
(b) मानसून से पहले
(c) शीतकाल से पहले
(d) सुबह से पहले

2. कोयल को 'शर्मीला पंछी' कहा जा सकता है, क्योंकि वह-
(a) धीरे-धीरे गाती है
(b) उड़ती नहीं रहती
(c) स्वयं को छुपाती है
(d) कौए की तरह लगती है

3. नर और मादा कोयल में निम्नलिखित में से क्या समान नहीं है ?
(a) रंग
(b) आँखें
(c) चोंच
(d) आवाज

4. कोयल की कौए से बहुत समानता है-
(a) रंग में
(b) उड़ान में
(c) आवाज में
(d) शर्मीलेपन में

5. इस गद्यांश के लिए सबसे उचित शीर्षक होगा-
(a) कौआ और कोयल
(b) दो काले पक्षी
(c) कोयल
(d)नर और मादा कोयल

अभ्यास कार्य

1-क्रिया किसे कहते है?

2- क्रिया के भेद के बारे में विस्तार पूर्वक लिखिए-

शीट क्रमांक 37 के उत्तर (अनुच्छेद)

1(b)
2(a)
3(d)
4(c)
5(d)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com

https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

6. निष्कर्ष :-

मिशन शिक्षण संवाद बाल रत्न वार्षिक परीक्षा छात्रों के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है, जिससे वे अपनी शैक्षणिक क्षमताओं का आकलन कर सकते हैं और भविष्य के लिए खुद को तैयार कर सकते हैं। यह परीक्षा न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि यह छात्रों को प्रतिस्पर्धा के लिए मानसिक रूप से भी मजबूत बनाती है।

बाल रत्न वार्षिक परीक्षा 2024-25 का संक्षिप्त विवरण :-

Total Enrolled students	4700
Primary level participation	1350
Junior Level participation	1945
Total Enrolled teachers	321
परीक्षा तिथि	19 एवं 20 मार्च 2025
सफल छात्र/छात्रा (Primary level)	536
सफल छात्र/छात्रा (Junior Level)	1468

जय शंकर (स०अ०)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुरवा
मलिहाबाद, लखनऊ

डिजिटल लिटरेसी व कोडिंग हेतु सॉफ्टवेयर का पिटारा (कक्षा- 6,7,8)

विवरण-

1- MS-WORD app for andriod mobiles

2- MS-EXCEL app for andriod mobiles

3- Ping Pong scratch app

4- Python codepad app

ये सभी apps हम प्ले-स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं।

आवश्यकता -

1- विज्ञान विषय के अंतर्गत जोड़े गये नवीन पाठ्यक्रम, डिजीटल लिटरेसी व कोडिंग में छात्रों को सक्षम बनाना।

2- इन apps के माध्यम से कम्प्यूटर तथा लैपटाप की उपलब्धता न होने पर भी बच्चे टैबलेट तथा अपने मोबाइल पर इन apps को डाउनलोड करके पाठयक्रम आधारित अभ्यास कर सकते हैं।

3- इन apps के माध्यम से हम जूनियर स्तर पर कम्प्यूटर के निम्न पाठ्य-वस्तुओं का अभ्यास कर सकते हैं।

MS-WORD में- डॉक्यूमेंट निर्माण, टेक्स्ट व पैराग्राफ़ एडिटिंग,फॉर्मेटिंग, बुलेट्स एंड नंबरिंग, डॉक्यूमेंट में इमेज ऐड करना,टेबल का उपयोग आदि।

MS-EXCEL में- वर्कबुक बनाना, सेव करना, सेल में डाटा दर्ज करना,ऑटोफिल, फार्मूला एवं फंक्शन व सेल संदर्भों का प्रयोग, मार्कशीट बनाना, रो व कालम को व्यवस्थित करना,डाटा की सॉर्टिंग व फिल्टरिंग,डाटा को चार्ट और ग्राफ में दर्शाना आदि।

Ping Pong Scratch app में- स्प्राइट, ड्रैग एंड ड्रॉप प्रक्रिया सीक्वेंसिंग, एनीमेशन अभ्यास, लूप का प्रयोग, डिबगिंग, कंडीशनल्स का प्रयोग, खेल की कोडिंग आदि।

Python CodePad app में- पाइथन टोकन्स, की-वर्ड्स, आईडेंटिफायर, ऑपरेटर्स और डीलीमिटर्स का प्रयोग करके पाइथन प्रोग्राम बनाना, पाइथन में यूजर इनपुट आदि।

इस प्रकार हमारे छात्र 'करके सीखना सिद्धांत पर कार्य करते हुए स्वयं अपने मोबाइल पर कंप्यूटर आधारित अभ्यास करके अपनी समझ विकसित कर सकते हैं।

श्रीमती वन्दना सिंह (स०अ)
कंपोजिट विद्यालय बनसहिया
विकास क्षेत्र- गौरी बाजार, जनपद-देवरिया

डिस्क्लेमर (अस्वीकरण)

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक साहित्य संकलन 'शिक्षण संवाद' बेसिक शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस मासिक साहित्य संकलन में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस मासिक साहित्य संकलन में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि मासिक साहित्य संकलन में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्च कोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संकलन मण्डल दावा नहीं करता है।

किसी भी सुझाव शिकायत के लिए मिशन के ईमेल– **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप नम्बर **9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. मिशन शिक्षण संवाद ऐप :
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.missionshikshansamvad.app

2. फेसबुक पेज : http://www.facebook.com/shikshansamvad/

3. फेसबुक समूह : http://www.facebook.com/groups/118010865464649

4. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.com

5. X : https://twitter.com/shikshansamvad?t=t61sjplXv4SmGJcD3I8x8Q&s=09

6. यू–ट्यूब : https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

7. व्हाट्सऐप नं0 : 9458278429

8. ई–मेल : shikshansamvad@gmail.com

9. टेलीग्राम : https://t.me/missionshikshansamvad

10. वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद